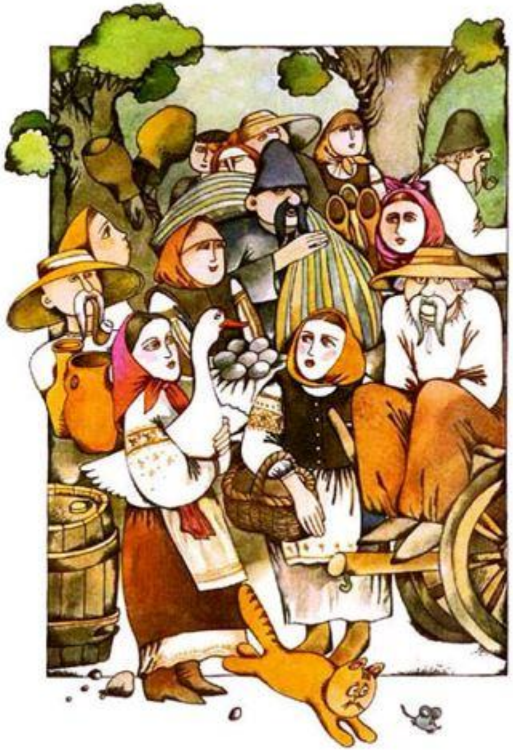


निबली-क्विबली बकरी

चित्र: एल. तकाचेंको, हिंदी: अरविन्द गुप्ता





एक बार की बात है, एक बूढ़ा आदमी और एक बूढ़ी औरत रहते थे.

एक दिन बूढ़ा आदमी मेले में गया और वहां से उसने एक बकरी खरीदी. वो बकरी को घर लाया. अगली सुबह उसने अपने बड़े बेटे से कहा कि वो उसे चराने के लिए बाहर ले जाए.





लड़के ने शाम तक बकरी को चराया और फिर उसे घर लाया. वो उसे सीधे गेट तक ले गया. वहां पर बूढ़ा आदमी अपने लाल जूतों में खड़ा था. उसने कहा:

"मुझे बताओ, छोटी बकरी, मुझे बताओ, निबली-क्विबली, क्या तुम्हारे पास खाने और पीने के लिए पर्याप्त है?"

बकरी ने उत्तर दिया, "नहीं, दादाजी, मैंने तो आज कुछ भी खाया-पिया नहीं."

"जब मैं एक पेड़ के पास उछलती हुई दौड़ रही थी,

तब मैंने एक पत्ता तोड़ा और उसका सिरा कुतरकर खाया.

जब मैं छलांग लगाती और कूदते हुए एक झरने के पास से गुज़री,

तो मैंने थोड़ा पानी उठाया और फिर एक पानी की बूंद पी!

आज मैंने बस यही खाया-पिया है."

बकरी की ठीक से देखभाल न करने के कारण बूढ़ा अपने बेटे से बहुत नाराज हुआ. उसने अपने बेटे को घर से बाहर निकाल दिया.

अगले दिन उसने अपने छोटे बेटे से बकरी को चराने के लिए बाहर ले जाने को कहा. युवक ने शाम तक बकरी चराई और फिर वो उसे घर लाया. वो बकरी को सीधे गेट तक ले गया. वहां बूढ़ा आदमी अपने लाल जूतों में खड़ा था. उसने कहा:

"मुझे बताओ, छोटी बकरी, मुझे बताओ, निबली-क्विबली, क्या तुम्हारे पास खाने और पीने के लिए पर्याप्त है?"

बकरी ने उत्तर दिया,

"नहीं, दादाजी, मैंने तो आज कुछ भी खाया-पिया नहीं."

"जब मैं एक पेड़ के पास उछलती हुई दौड़ रही थी,

तब मैंने एक पत्ता तोड़ा और उसका सिरा कुतरकर खाया.

जब मैं छलांग लगाती और कूदते हुए एक झरने के पास से गुज़री,

तो मैंने थोड़ा पानी उठाया और फिर एक पानी की बूंद पी!

आज मैंने बस यही खाया-पिया है."

फिर बूढ़े आदमी ने अपने छोटे बेटे को भी घर से बाहर निकाल दिया.

तीसरे दिन उसने बूढ़ी औरत को बकरी चराने के लिए भेजा. बुढ़िया पूरे दिन बकरी चराती रही, और जब शाम हुई तो वह उसे घर ले गई. बूढ़ा आदमी अपने लाल जूतों में गेट के पास खड़ा था. उसने कहा:

"मुझे बताओ, छोटी बकरी, मुझे बताओ, निबली-क्विबली, क्या तुम्हारे पास खाने और पीने के लिए पर्याप्त है?"

बकरी ने उत्तर दिया,

"नहीं, दादाजी, मैंने तो आज कुछ भी खाया-पिया नहीं."

"जब मैं एक पेड़ के पास उछलती हुई दौड़ रही थी, तब मैंने एक पत्ता तोड़ा और उसका सिरा कुतरकर खाया.

जब मैं छलांग लगाती और कूदते हुए एक झरने के पास से गुज़री, तो मैंने थोड़ा पानी उठाया और फिर एक पानी की बूंद पी!

आज मैंने बस यही खाया-पिया है."

इसलिए बूढ़े आदमी ने बूढ़ी औरत को भी घर से बाहर निकाल दिया.





चौथे दिन वह स्वयं बकरी चराने गया. वो दिन भर उसे चराता रहा, और जब शाम हुई तो उसने बकरी को सड़क पर छोड़ दिया. फिर वो खुद आगे दौड़कर लाल जूते पहनकर अपने घर के द्वार पर खड़ा हो गया.

बूढ़े आदमी ने कहा:

"मुझे बताओ, छोटी बकरी, मुझे बताओ, निबली-क्विबली, क्या तुम्हारे पास खाने और पीने के लिए पर्याप्त है?"

बकरी ने उत्तर दिया, "नहीं, दादाजी, मैंने तो आज कुछ भी खाया-पिया नहीं."

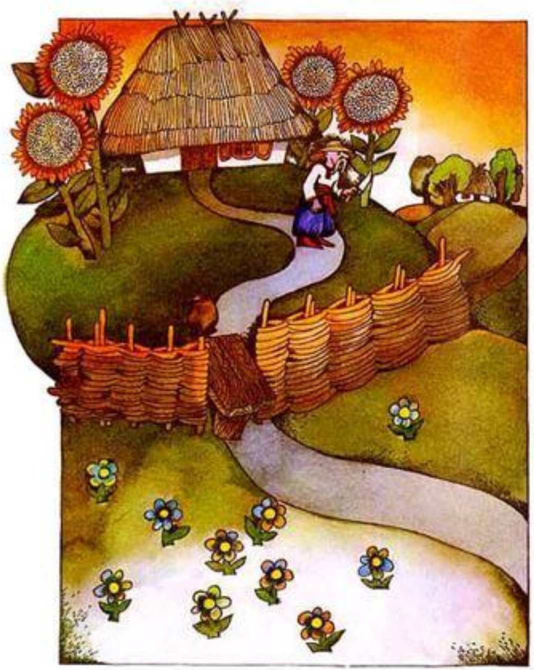
"जब मैं एक पेड़ के पास उछलती हुई दौड़ रही थी,

तब मैंने एक पत्ता तोड़ा और उसका सिरा कुतरकर खाया.

जब मैं छलांग लगाती और कूदते हुए एक झरने के पास से गुज़री,

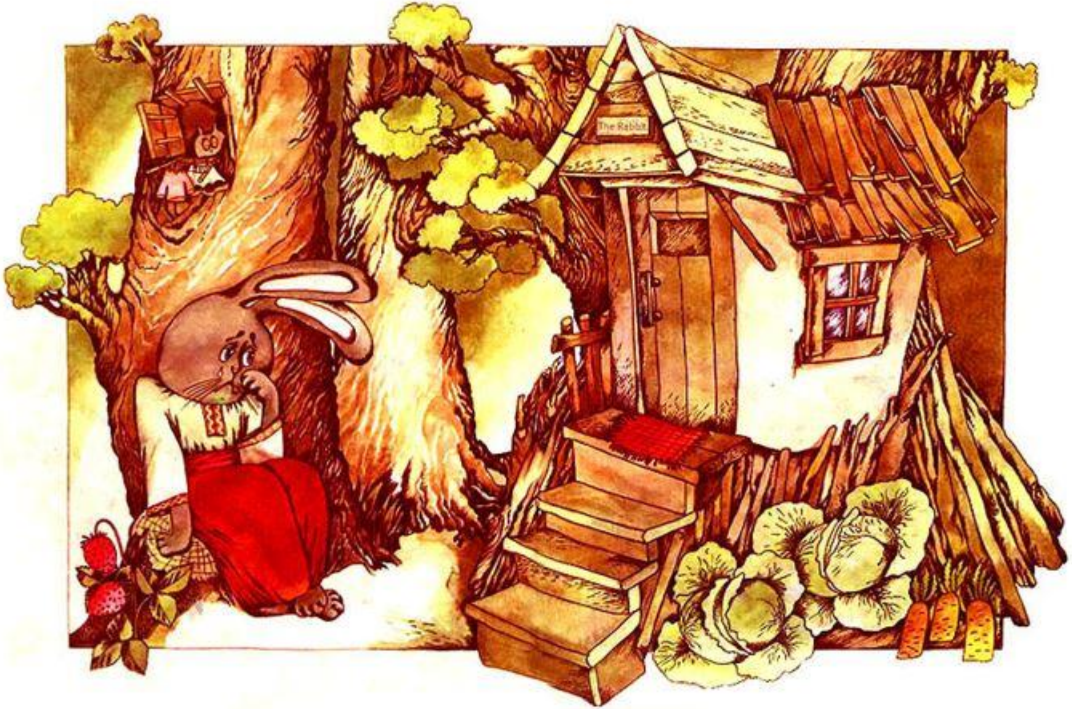
तो मैंने थोड़ा पानी उठाया और फिर एक पानी की बूंद पी!

आज मैंने बस यही खाया-पिया है."





बूढ़ा आदमी को बकरी पर बहुत गुस्सा आया. वो एक लोहार के पास गया और उसने अपने चाकू पर धार लगवाई, और वो बकरी को मारने ही वाला था, लेकिन तभी बकरी ने रस्सी से तोड़ डाली और वो जंगल में भाग गई.



उसने वहां एक खरगोश की झोपड़ी देखी. वो अंदर गई और चूल्हे में छिप गई.

कुछ देर में खरगोश अंदर भागकर आया. लेकिन उसे झोपड़ी में कोई अजनबी लगा.

"मेरी झोपड़ी में कौन है?" खरगोश चिल्लाया.

बकरी ने वापस उत्तर दिया:

"मैं निबली-क्विबली बकरी हूं
फटी हुई चमड़ी और खाल वाली.
मेले से मुझे लाया गया
और तीन कोपेक में खरीदा गया.
मैं तुम्हें मिमियाकर डरा दूंगी,
मैं तुम को अपने पैरों से कुचल दूंगी,
मैं तुम्हें अपने सींगों से छेद डालूंगी
मैं अपनी पूंछ से मैं तुम्हें मार दूंगी,
और फिर इस तरह तुम्हारा अंत होगा!"

खरगोश बहुत डर गया. वो झोपड़ी से बाहर भागा, और एक बांझ के पेड़ के नीचे बैठ गया और रोने लगा.





तभी एक भालू लपकता हुआ आया.

"तुम क्यों रो रहे हो, खरगोश भाई?" उसने पूछा.

"बताओ मैं क्या करूं? एक भयानक जानवर मेरी झोपड़ी में बैठा है."

"मैं उसे बाहर निकाल दूंगा!" भालू ने कहा, और वो झोपड़ी की ओर चला गया.



"इस झोपड़ी में कौन बैठा है?" भालू चिल्लाया.

और बकरी ने वापस उत्तर दिया:

"मैं निबली-क्विबली बकरी हूं

फटी हुई चमड़ी और खाल वाली.

मेले से मुझे लाया गया

और तीन कोपेक में खरीदा गया.

मैं तुम्हें मिमियाकर डरा दूंगी,

मैं तुम को अपने पैरों से कुचल दूंगी,

मैं तुम्हें अपने सींगों से छेद डालूंगी

मैं अपनी पूंछ से मैं तुम्हें मार दूंगी,

और फिर इस तरह तुम्हारा अंत होगा!"

यह सुनकर भालू बहुत डर गया, और वो झोपड़ी से दूर बाहर भाग गया!

"मुझे डर है कि मैं तुम्हारी मदद नहीं कर सकता, खरगोश," भालू ने कहा.

इसलिए खरगोश फिर से बांझ के पेड़ के नीचे बैठ गया और वो रोने लगा.

धीरे-धीरे एक भेड़िया तेजी से उछलता हुआ आया.

"तुम क्यों रो रहे हो, खरगोश भाई?" उसने पूछा.

"बताओ मैं क्या करूं! एक भयानक जानवर मेरी झोपड़ी में बैठा है."

"मैं उसे बाहर निकाल दूंगा!" भेड़िए ने कहा.

"मैं इस पर कैसे यकीन करूं. भालू ने कोशिश की, लेकिन वो उसमें फेल हुआ, तो फिर तुम उसे कैसे कर पाओगे?"

"ठीक है, बस देखो!"





और भेड़िया झोपड़ी के पास गया.

"इस झोपड़ी में कौन बैठा है?" वो चिल्लाया.

और बकरी ने वापस बुलाया:

"मैं निबली-क्विबली बकरी हूं
फटी हुई चमड़ी और खाल वाली.
मेले से मुझे लाया गया
और तीन कोपेक में खरीदा गया.
मैं तुम्हें मिमियाकर डरा दूंगी,
मैं तुम को अपने पैरों से कुचल दूंगी,
मैं तुम्हें अपने सींगों से छेद डालूंगी
मैं अपनी पूंछ से मैं तुम्हें मार दूंगी,
और फिर इस तरह तुम्हारा अंत होगा!"

भेड़िया बहुत डर गया और वो तुरंत बाहर भाग गया.

"मुझे डर है कि मैं तुम्हारी मदद नहीं कर सकता, खरगोश!" भेड़िए ने कहा.

और खरगोश फिर से बांझ के पेड़ के नीचे जाकर बैठ गया और वो रोता रहा और रोता रहा.

धीरे-धीरे एक लोमड़ी तेजी से भागती हुई आई.

"तुम क्यों रो रहे हो, खरगोश?" उसने पूछा.

"बताओ मैं क्या करूं! एक भयानक जानवर मेरी झोपड़ी में बैठा है."

"मैं उसे बाहर निकाल दूंगी!" लोमड़ी ने कहा.

"मैं तुम पर यकीन कैसे करूं लोमड़ी. भालू ने कोशिश की और वो फेल हुआ, भेड़िए ने भी कोशिश की और वो भी नहीं कर पाया. फिर तुम वो काम कैसे कर पाओगे?"

"ठीक है, बस देखो मैं वो काम कैसे करता हूं!"



फिर लोमड़ी झोपड़ी के पास गई.

"इस झोंपड़ी में कौन बैठा है?" उसने पुकारा.

और बकरी ने वापस उत्तर दिया:

"मैं निबली-क्विबली बकरी हूं

फटी हुई चमड़ी और खाल वाली.

मेले से मुझे लाया गया

और तीन कोपेक में खरीदा गया.

मैं तुम्हें मिमियाकर डरा दूंगी,

मैं तुम को अपने पैरों से कुचल दूंगी,

मैं तुम्हें अपने सींगों से छेद डालूंगी

मैं अपनी पूंछ से मैं तुम्हें मार दूंगी,

और फिर इस तरह तुम्हारा अंत होगा!"

लोमड़ी बहुत डर गई और बाहर भाग गई.

"मुझे डर है कि मैं तुम्हारी मदद नहीं कर सकती, खरगोश!" उसने कहा.

और खरगोश फिर से बांझ के पेड़ के नीचे बैठ गया और वो रोता रहा और रोता रहा.

धीरे-धीरे एक क्रेफ़िश रेंगती हुई ऊपर आई.

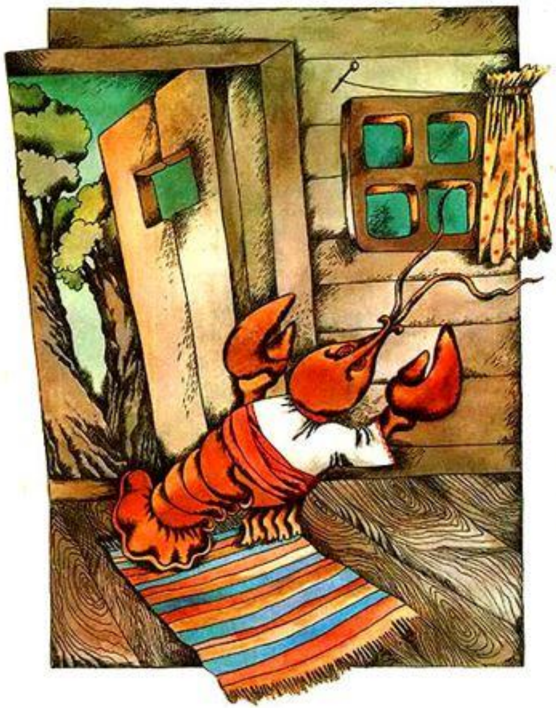
"तुम क्यों रो रहे हो, खरगोश?" उसने पूछा.

"मैं क्या करूं! एक भयानक जानवर मेरी झोपड़ी में बैठा है."

"मैं उसे बाहर निकाल दूंगा!"

"मैं इस पर विश्वास नहीं करता! भालू ने कोशिश की और वो फेल हुआ, भेड़िए ने कोशिश की और वो नहीं कर सका, लोमड़ी ने कोशिश की और वो भी नहीं कर सकी, तो फिर तुम वो काम कैसे करोगे?"

"ठीक है, बस देखो मैं वो काम कैसे करता हूं!"



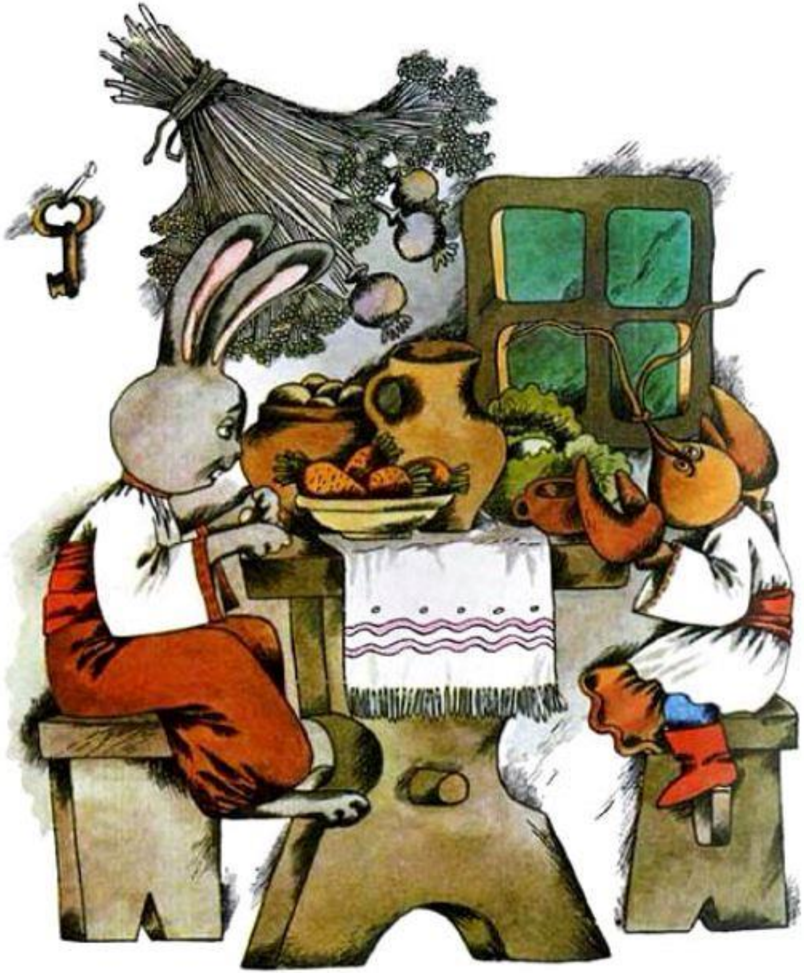


और उसके साथ ही क्रेफ़िश रेंगते हुए खरगोश की झोपड़ी में घुस गई.

"इस झोपड़ी में कौन बैठा है?" उसने पूछा.

और बकरी ने वापस उत्तर दिया:

"मैं निबली-क्विबली बकरी हूं
फटी हुई चमड़ी और खाल वाली.
मेले से मुझे लाया गया
और तीन कोपेक में खरीदा गया.
मैं तुम्हें मिमियाकर डरा दूंगी,
मैं तुम को अपने पैरों से कुचल दूंगी,
मैं तुम्हें अपने सींगों से छेद डालूंगी
मैं अपनी पूंछ से मैं तुम्हें मार दूंगी,
और फिर इस तरह तुम्हारा अंत होगा!"



लेकिन उससे क्रेफ़िश नहीं रुकी. वो लगातार रेंगती रही, और चूल्हे पर रेंगकर चढ़ गई और बोली:

"हर कोई मुझ से डरता है,

और तुम्हें उसका जल्द ही पता चल जाएगा, कैसे?

मैं झपटूंगी - और फिर तुम छलांग लगाओगी,

मैं चुटकी काटूंगी - और तुम रोने लगोगी!"

और फिर क्रेफ़िश ने बकरी को अपने पंजों से जोर से काटा.

बकरी मिमियाई, वो चूल्हे से नीचे कूदी, और फिर जितनी तेजी से उसके पैर उसे ले जा सकते थे वो उतनी तेजी से भागी!

उसके बाद खरगोश बहुत खुश हुआ. वो अपने घर में गया और उसने क्रेफ़िश को बार-बार धन्यवाद दिया. और तब से खरगोश आज तक अपनी झोंपड़ी में बड़े आराम से रहता है.